यह है युद्ध। जब बाप के बच्चे बनते हैं। बच्चे तो भिन्न-2 प्रकार के हैं, कोई महारथी हैं, घोड़े सवार हैं। ऐसे भी नहीं महारथी, घोड़ेसवार हार नहीं खाते हैं। सभी हार खाते हैं। खानी भी ज़रूर है; क्योंकि याद भूल जाते हैं। यह बहुत जबरदस्त लड़ाई है। ऐसी लड़ाई है जिससे विश्व की बादशाही पाई जाती है। तो अपने ऊपर नज़र रखनी होती है। एक तो किसको दुख न देना है। बाप समझाते हैं याद की यात्रा का चार्ट रखो। कोई कठिन नहीं है। अपनी मुरादी देखनी है। व्यापारी तो हो ही। व्यापार बाप से करते हो। बाप खुद कहते हैं जितना बाबा को याद करेंगे उतना सुख मिलेगा, आत्मा सतोप्रधान बनेगी। बाप ने समझाया है कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। रोज़ जाँच करनी है कोई को दुख तो नहीं दिया? दैवी चलन रखनी है। मनसा-वाचा-कर्मणा कोई को दुख नहीं देना है। वहाँ मन तक भी कोई दुख देने की बात नहीं आवेगी। यहाँ रोकना होता है जो फिर स्थायी हो जाता है। बाप तो समझाते हैं टीचर है ना। जैसे बाप-माँ होते हैं तो बच्चों की सम्भाल करते हैं। बाप डायरैक्शन देते हैं उनके कल्याण के लिए कान पकड़ो। श्रीमत पर किया ना। बहुत लिखते हैं बच्चों के लिए क्या करें? बाप समझाते हैं यह क्रोध नहीं, तुम उनका कल्याण करते हो। दिखाते हैं कृष्ण को उखल से बांधा। यह दृष्टान्त बनाया है, ऐसी कोई बात वहाँ होती ही नहीं। अभी संगम की बात है। बहुत प्रकार की बातें बच्चे पूछते रहते हैं। हरेक के स्वभाव का मालूम पड़ता है। सम्पूर्ण कोई बना न है। कुछ न कुछ असम्पूर्णता का रहता है। एक बात तो रहती है बाबा की याद भूल जाते हैं। यह यु(द्ध) पिछाड़ी तक चलती रहेगी। चलन से मालूम पड़ जाता है। इसने हार खाई। इसने यह किया। युद्ध बन्द तब होगी जब महाभारत लड़ाई लगेगी। तब रिजल्ट निकलेगी। अभी तुम फील करेंगे हम तो बहुत दूर हैं। रजिस्टर रखा जाता है ना। तो उनको मालूम पड़े। गुड भी लिखेंगे, बेटर भी लिखेंगे, बेस्ट भी लिखेंगे। वहाँ तो कब रजिस्टर होते ही नहीं। तो अपने ऊपर साक्षी हो नज़र रखनी है। अपनी चलन को देखना चाहिए। सिर्फ दूसरों को देखने से अपना भूल जावेंगे। अपना भी देखना चाहिए। पढ़ाई में नम्बरवार तो होते ही हैं। कोई ऊपर, कोई नीचे। बाबा कहते हैं हफ्ते-2 पत्र तो लिखो। अपने हाथ से लिखो। कोई लिखते हैं फलाने का यादप्यार। बाबा नहीं मानता। फुर्सत न हो पत्र लिखने की, बाबा नहीं मानता। ऐसे बाप को तो कैसे भी लिखना चाहिए। इस समय श्वासों श्वास तो याद कर न सके। जितना हो सके याद करो। गस्सा न लगाना है। छिपकर कुछ करते हैं, अपना ही सौणा नुकसान करते हैं। बच्चे को बाप के साथ सच्चा रहना चाहिए। सर्विस भी अनेक प्रकार की हैं। स्थूल सर्विस भी बहुत है। जैसी अवस्था वैसी रहनी-करनी होती है। वह समय आवेगा जब कोई अछूत आ न सकेंगे। देह-अभिमानी को अछूत कहा जाता है। तुम बच्चों को फीलिंग आती है सम्पूर्ण निर्विकारी यह देवताएँ ही बनते हैं। वहाँ विकार होता ही नहीं; क्योंकि रावण राज्य नहीं। तो सम्पूर्ण ज़रूर बनना पड़े। अपने ऊपर जाँच रखनी होती है। बाप कहते हैं देह के सभी संबंध त्याग अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। पढ़ाई के समय टीचर भी ज़रूर याद आता है। पढ़ाई से तुम नई दुनिया में ऊँच पद पावेंगे। बाबा जानते हैं यह बच्ची कितनी सर्विस करती है। नम्बरवार तो हैं ना। जितना पुरुषार्थ करना चाहिए। तुम कहाँ भी सर्विस कर सकते हो। गाँवों में भी सर्विस कर सकते हो। सर्विस बहुत सहज (है)। एक अक्षर कहना है, यह तुम्हारा फर्ज है। अभी तुम बच्चों को नॉलेज है, माला बननी है। कल्प-2 बाप आते हैं। ऐसे स्थापना होती है। प्रजा भी अभी बनती है। जितना पुरुषार्थ करते हैं ऐसी प्रजा भी बनती है। कल्प-2 जो एक्टीविटी हुई है, जितना अच्छी-2 सर्विस की है उतना ऊँच पद ज़रूर पाते हैं। पहले तो अपने ऊपर नज़र चाहिए। मैं कैसा पार्ट बजाता हूँ? किसको दुख तो नहीं देता हूँ? कोई भी विकार है तो दुख है। कोई मरे तो भी क्या। जानते हो पार्ट पहले से ही बना हुआ है। आगे यह ज्ञान न था। तो भगवान को भी गाली दे देते थे। तुम बच्चों को अभी सारी नॉलेज मिलती है। कहाँ भी जाते हो बाप को याद ज़रूर करना है। दूसरों को भी याद कराना चाहिए। शिवबाबा याद है? लिख दो। तो ताकत आवेगी। किसको स्नान कराते हो। याद है? बाबा आप के

रथ को स्नान कराती हूँ। तो हरेक को एक/दो को याद दिलाए उन्नति को पाना है। ऐसी अवस्था हो जाए जो खुशी से घर जाए। इस समय तुम जानते हो हमको घर जाना है, जितना दैवीगुण धारण करेंगे आप समान बनायेंगे। यह तो समझने की सहज बात है। स्कूल में भी समझते हैं यह कितने मार्क्स से पास होंगे। तो इसमें भी सर्विस का सबूत देना है। बाप को पत्र भी लिखे, नहीं तो बाबा को कैसे मालूम पड़े किसने किसको बनाया। जो किसको समझाते हैं वह लिख सकते हैं, सभी को हक है पत्र लिखने का। देह-अभिमानी जो होते हैं वह मना करते हैं, कहाँ मेरी रिपोर्ट न लिख दे। बाबा ब्राह्मणियों की अवस्था से, रहनी-करनी से समझते हैं। बाप को समाचार देने का हरेक को हक है। बाप को कैसे मालूम पड़े यह ब्राह्मण(ी) कैसी चल रही है? साधु-सन्तों में कोई बहुत देह-अभिमानी होते हैं, अपना ही बड़ा नशा रहता है। कोई भी बात में झट बिगड़ पड़ेंगे। कोई धैर्य से सुनेंगे। कहेंगे कुछ अच्छा। कई तो झट कह देंगे यह उन्हों की कल्पना है। कल्पना का अर्थ कोई होता नहीं है। अपना ख्यालात से यह बनाया हुआ है। उन्हों की मत है। कोई से भी जास्ती बात नहीं करनी है। कोई भी साधु-सन्यासी आवे। कुछ भी पूछेंगे। बोलो–बाप को याद करो। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। हमेशा अंगुली से इशारा करते हैं उनको याद करो। यह नहीं जानते हैं याद करने से क्या फायदा। अर्थ कुछ नहीं जानते। तुम अर्थ जानते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे; परन्तु माया के युद्ध है। जितना पुरुषार्थ तुम बच्चों ने कल्प-कल्प किया है, करते रहेंगे। भक्ति भी खास अमृतवेले सवेरे करते हैं। बाप कहते हैं पतित-पावन एक ही है उनको याद करो। और कोई नहीं। स्वर्ग का मालिक बनाने वाला एक ही बेहद का बाप है। यह बड़ी जबरदस्त लॉटरी है। कम नहीं समझना। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में आता है कृष्ण विश्व का प्रिन्स था। कृष्ण और कृष्ण के बाप की अवस्था में फर्क तो होगा ना। कृष्ण की महिमा है, बाप की महिमा नहीं है। वह सतोप्रधान पक्का योगी है। कहता हूँ तुम जास्ती याद में रहते हो; परन्तु यह भी जानता हूँ हम दोनों इकट्ठे हैं। क्या बनते हैं। खुशी तो रहती है ना। हमको यह बनना है। पढ़ाने वाला बाप मिला है। फिर भी तकदीर में नहीं है तो तदबीर करते ही नहीं। माया किसको थोड़ा जीतती है, कोई को बहुत जीतती है। पूरा हप कर लेती है। गज को ग्राह पकड़ लेती है। कोई की टांग टूट पड़ती है, कोई की क्या। यहाँ भी बच्चों को भिन्न-2 प्रकार की चोटें लगती हैं। भूलने से कुछ न कुछ उल्टा काम कर लेते हैं। कहाँ भी घूमने जाओ, बाप को याद करते रहो। यहाँ तो बहुत फुर्सत है। धंधा आदि है नहीं। सभी योगी रहते हैं तो योग से आत्मा पावन होती है। कोई भी छी-छी याद बुद्धि में नहीं आवे। सुप्रीम शान्ति। फिर नाम ही रखेंगे टावर ऑफ साइलेंस। जो टावर बनते हैं, नम्बरवन तो वह जावेंगे। पिछाड़ी को तुम्हारी ऐसी अवस्था हो जावेगी, बहुत ही खुशी से शरीर छोड़ेंगे। कहाँ यह शरीर छूटे तो बाबा के पास जावें। याद करते-करते ही घर पहुँच जावेंगे। शरीर का भी भान न रहे। फिर कुछ दुख न रहेगा। दुख भी कर्मभोग है ना। इसलिए सर्प के खल का मिसाल देते हैं। देखते हैं नई तैयार हो गई है तो पुराने खल को छोड़ देते हैं। देरी नहीं लगती। तो तुमको भी ऐसे ही जाना है। एक शरीर छोड़ दूसरा धारण करना है। यह प्रैक्टिस होगी। स.... ब्रह्मज्ञानी भी मौत समय याद में लग जावेंगे। तुम भी याद में रहते हो सच्ची-2 याद की यात्रा। बाप सिखलाते हैं। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यह पद पाने का है। बाप बच्चों को कहते हैं ऐसे मीठे बाप को याद करो जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं और दैवीगुण धारण करो। तुमको खुद फीलिंग आवेगी हमको सिवाय बाप के और कोई नहीं याद पड़ता। बड़ी अडोल, अचल रहेंगे। बापदादा, अनन्य बच्चों को कोई फिक्र नहीं। अनेक बार बाप से वर्सा लिया है तो पक्के खुशी में रहेंगे। निरन्तर याद बढ़ाते जावेंगे, तुमको नॉलेज है ना। उसी समय के लिए कहते हैं अति-इन्द्रिय सुख पूछना हो तो..... टीचर स्टूडेंट समझ सकते हैं। यह इतने नम्बर से पास होंगे। अच्छा पद पावेंगे। मूल बात है बाप को बहुत प्रीत से याद करना। प्रीत बुद्धि .... कितना फर्क पड़ता है पोजीशन में। विपरीत और प्रीत की जैसे कि रेस है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।